Lecture No. 22
Date: 23.07.2020

Dr. Madan Paswan, History.



Class :- B.A. Part-I (Sub.) Paper from page no. 1 only

पाठ्यक्रम Unit-II : Ancient India :-

(1) Mauryan Empire — Chandragupta Mauryan :-

मौर्य वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी, जो एक साधारण कुल और परिवार के थे। ब्राह्मणवादी परम्परा के अनुसार, वे नन्दों के रनवास में रहने वाली एक शूद्र महिला, मुरा की कोख से पैदा हुए थे। हालाँकि, प्राचीन बौद्ध परम्परा से पता चलता है कि मौर्य, नेपाली तराई के पास गोरखपुर क्षेत्र के पीपहलिवन के छोटे गणराज्य के क्षत्रिय वंश या शासक वंश के थे। यह सम्भव है कि चन्द्रगुप्त भी इसी कबीले से रहे हों। उन्होंने नन्द शासन के अंतिम दिनों का लाभ उठाया। चाणक्य, जिन्हें कौटिल्य भी कहा जाता है, उनकी मदद से चन्द्रगुप्त ने नन्दों का प्रभुत्व मिटाकर मौर्य वंश के शासन की स्थापना की। चन्द्रगुप्त चाणक्य के कूटनीतियों के माध्यम से आगे बढ़ते गये। नौवीं शताब्दी में विशाखदत्त रचित नाटक "मुद्राराक्षस" में चन्द्रगुप्त के शत्रुओं के विरुद्ध चाणक्य द्वारा रची गई कूटनीतियों का वर्णन है। इस विषय पर आधुनिक समय के कई नाटक लिखे गए हैं।

इतिहासकार 'जस्टिन' के अनुसार, 600000 सेना के साथ चन्द्रगुप्त ने संपूर्ण भारत को जीत लिया था। यह बात सच हो या न हो, लेकिन इतना सच है कि चन्द्रगुप्त ने सिन्धु के पश्चिमी क्षेत्रों पर शासन कर रहे सेल्यूकस के शिकंजे से उत्तर-पश्चिमी भारत को मुक्त कराया। यूनानी वायसराय के साथ युद्ध में, चन्द्रगुप्त विजयी साबित हुए। आखिरकार, दोनों के बीच शान्ति समझौता हुआ एवं 500 हाथी के बदले में सेल्यूकस ने उन्हें न केवल अपनी बेटी, बल्कि पूर्वी अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और सिन्धु का पश्चिमी इलाका भी दे दिया। इस प्रकार, चन्द्रगुप्त ने विशाल साम्राज्य कायम किया, जिसमें बिहार, उड़ीसा और बंगाल ही नहीं, पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भारत और दक्कन भी शामिल थे। केरल, तमिलनाडु और उत्तर-पूर्वी भारत के कुछ हिस्सों के अलावा, मौर्य ने लगभग पूरे उपमहाद्वीप पर शासन किया। उत्तर-पश्चिम में, उन्होंने उन खास क्षेत्रों पर भी दबदबा बनाया, जिन्हें ब्रिटिश साम्राज्य भी अपना हिस्सा नहीं बना पाया। मौर्य ने गणराज्यों या संघों को भी जीत लिया, जिसे कौटिल्य, साम्राज्य विस्तार में बाधक मानते थे।

Continue......

History

Date: 23.07.2020

Class: B.A. Part-I (Sub.) Paper

प्राचीन भारत का इतिहास पाठ्यक्रम Unit-II

(i) Mauryan Empire — चन्द्रगुप्त मौर्य :-

चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन की मुख्य विशेषताएँ थीं —
सत्ता का अत्यधिक केन्द्रीकरण,
विकसित अधिकारितंत्र,
उचित न्याय व्यवस्था,
नगर शासन,
कृषि,
शिल्प उद्योग,
संचार तथा
वाणिज्य एवं व्यापार की वृद्धि के लिए राज्य द्वारा किये गये अनेक कारगर उपाय।

तत्कालीन साक्ष्यों के अनुसार, चन्द्रगुप्त मौर्य का शासन प्रबंध एक कल्याणकारी राज्य की धारणा को चरितार्थ करता है। ग्रामीण एवं शहरी, दोनों क्षेत्रों के लिए प्रशासनिक व्यवस्था की गई थी।

खुदाई से पता चलता है कि मौर्य काल के नगरों की काफी बड़ी संख्या है। पाटलिपुत्र, कौशाम्बी, उज्जैन और तक्षशिला उनमें सबसे महत्वपूर्ण नगर थे। मेगस्थनीज के अनुसार, भारत में कई नगर मौजूद थे, लेकिन उन्होंने पाटलिपुत्र को सबसे महत्वपूर्ण माना। वे उसे पलिबोथरा कहते हैं। इस यूनानी शब्द का अर्थ है — द्वार वाला नगर। उनके अनुसार, पाटलिपुत्र एक नगरी खाई और 570 टावर सहित लकड़ी की दीवार से घिरा हुआ था और 64 दरवाजे थे। खाई, लकड़ी के घेरे और लकड़ी के मकान उत्खनन में पाए गए हैं। इनके अनुसार, पाटलिपुत्र — 9.33 मील लम्बा एवं 1.75 मील चौड़ा था। यह आकार आज के पटना से मिलता है, क्योंकि आज भी पटना की लम्बाई अधिक और चौड़ाई कम है।

Continue.....